International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232
Impact Factor: RJIF 5.22
www.hindijournal.com
Volume 3; Issue 5; September 2017; Page No. 96-99

जय शंकर प्रसाद के काव्य कामायनी में नारी सौदर्य

डॉ. रीता शुक्ला
व्याख्याता हिन्दी विभाग राजकीय महाविद्यालय बयाना भरतपुर, राजस्थान, भारत

सारांश
कामायनी छायावाद की चरम परिणति है और जयशंकर प्रसाद के गंभीर चिंतना का श्रेष्ठतम प्रतिफल भी है। पन्द्रह सर्गों में विभक्त यह काव्य श्रद्धा और मनु के माध्यम से सृष्टि के विकास की कथा को तो प्रस्तुत करता ही है श्लिष्ट रूपक–विधान के सहारे मानवता के चरम विकास को भी मनोवैज्ञानिक और आध्यात्मिक भूमिका पर प्रस्तुत करता है। बीसवीं शताब्दी की महनीय उपलब्धि के रूप में कामायनी दार्शनिक, सांस्कृतिक, मनोवैज्ञानिक और कलात्मक वैशिष्ट्य का समीकृत रूप लेकर आई है। श्चिन्ता से श्आनन्दश् की चरम परिणति तक की यात्रा करता हुआ यह काव्य हिमगिरि की एक चेतनता से समरस होने वाले मनु के जीवन का इतिहास है। मानवीय चेतना के अन्नमय कोष से आनंदमय शिखर तक पहुँचने की यात्रा का वृत्तान्त है। इसके प्रमुख पात्र मनु,श्रद्धा और इड़ा है, जो इच्छा, क्रिया और ज्ञान के प्रतिनिधि हैं।

मूल शब्दः नारी–सौंदर्य, नारी–चेतना, नारी–आदर्श, आत्मिक महिमा, ममता, आस्था, आत्मिक महिमा, ममता, आस्था, समरसता, प्रेम,आनंद, आदर्श, जीवन–शक्ति, विश्वकल्याण

कामायनी में नारी सौंदर्य

श्रद्धा कामायनी जगत की मंगल कामना अकेली और विश्वचेतना व पूर्णकाम की प्रतिमा है। इड़ा बुद्धि की प्रतीक है। किंतु अपने सौंदर्य से 'नयन महोत्सव' की प्रतीक भी है। इतने पर भी यह सच है कि उसका व्यक्तित्व बौद्धिक बना रहा है। श्रद्धा भारतीय संस्कृति की जीवंत प्रतिमा है तो इड़ा आधुनिक पाश्चात्य सभ्यता और यांत्रिक युग की मनोवृत्तियों के साथ जुड़ी प्रतीत होती है। 'कामायनी' जीवन की प्रमुख समस्या का समाधान भी है और आनंदवाद की प्रतिष्ठा भी है। आज जीवन जैसा है, उसमें न कहीं चौन है और न सुख शांति ही है। यही कारण है कि 'कामायनी' के सहारे सतत् संघर्षशील और चिर अशांत जीवन को समरस और आनंदमय बनाने की प्रवृत्ति को निरूपित किया गया है। 'चिन्ता सर्ग' मानव की संघर्षशील और व्यथित स्थिति का निरूपक है और आनंद सर्ग समरस और आनंदमय स्थिति का। चूँकि नारी सौंदर्य का प्रतीक है। इसमें अवयव की सुंदर कोमलता है और छायापथ में तारक युति सी झिलमिल करने की मधुमयता है। काव्य में नारी के चित्रण के साथ ही उसका सौंदर्य चित्रण शाश्वत है। आज के साहित्य में सौंदर्य, सौंदर्य के लिए प्रतिष्ठित है। सौंदर्य और आनंद का घनिष्टतम संबंध है। वास्तविक सौंदर्य का दर्शन हममें अनिवार्यतः आनंद भावना का संचार करता है। आनंद की यह विलक्षण भावना सामान्य उपयोगिता से पृथक असाधारण आह्लादमयी अनुभूति है। इसके प्रभाव अवचेतन में बड़े धुंधले व अस्पष्ट रूप में होते हैं। अतः यह भावना अनिवर्चनीय है। सौंदर्यमयी नारी को कृत्रिम आवरण की कोई आवश्यकता नहीं होती, क्योंकि उस पर सभी कुछ शोभा देने लगता है। छायावादी युग में पूर्ववर्ती युगों की सौंदर्य दृष्टि की प्रतिक्रियास्वरूप एक नवीन सौंदर्य दृष्टि का उन्मेष हुआ। नारी के सहज सौंदर्य को जितनी ललक व उत्साह के साथ छायावादी काव्य में स्वीकार किया गया वह सुविदित है। व्यापक स्वच्छंदता की नवीन वृत्ति ने उन्मुक्त भाव से नारी के नैसर्गिक सौंदर्य की अबाध चर्वणा करने की प्रेरणा प्रदान की। नारी– सौंदर्य के शारीरिक, मानसिक, छवि, स्वभाव तथा आत्मिक स्थलों के प्रति इस प्रकार की उत्कंठाओं पूर्ण जिज्ञासा हिंदी कविता में पहली बार परिलक्षित हुई। जिस प्रकृति का गुणगान आरंभ में छायावादी कवियों ने किया जो प्रकृति आरंभ में नारी–विरोधी प्रतीत होती थी, वही नारी की आवश्यकता अनुभव करने वाली तथा कारण बन गई। इस पर यह भी कहा जा सकता है कि द्विवेदी–युगीन आर्यसमाजी नैतिकता की प्रतिक्रिया का पहला सोपान प्रकृति– प्रेम था, जिसने नारी–प्रेम के लिए पृष्ठभूमि तैयार की। साहित्य में प्रेम का ही अनिवार्य परिणाम तथा उसका आवश्यक अंग है। इसके फलस्वरूप पहली बार छायावादी कविता में नारी को प्रेयसी का ऊँचा आसन प्राप्त हुआ। प्रेयसी, प्रिये, प्रियतमें और सखि, सजनी जैसे संबोधन जिस मात्रा में छायावादी कविता में व्यक्त किए गए पहले शायद ही किए गए हों। प्रेयसी का आधार बिंदु प्रेम शब्द सागर में निहीत है। छायावाद के कीर्ति स्तंभ कवि प्रसाद की कविता में प्रेम की जो प्रधानता मिली वह अपूर्व है, यहाँ तक कि छायावाद को सामान्यतः प्रेम–काव्य समझा जाता है। जहाँ एक ओर द्विवेदी–युग में सुधारवादी नैतिकता का इतना आतंक था कि प्रेम की कविता लिखते हुए कवि जन संकोच करते थे, क्योंकि उन्हें रीतिकालीन कहे जाने का डर था। वस्तुतः द्विवेदी युग में भी नारी के प्रति पुरुष का दृष्टिकोण बहुत कुछ वही था, जो रीतिकाल में था। दोनों युगों के दृष्टिकोणों में मौलिक अंतर नहीं था। अंतर इतना ही था कि रीतिकालीन कवि जिन बातों को निधड़क कह देता था, द्विवेदी–युग का कवि उन्हें मन ही मन दबा लेता था। वहीं दूसरी ओर छायावाद युग आते–आते नवीन प्रतिक्रिया काफी पुष्ट हो गई और पुरानी रूढियाँ जर्जर हो चली, इसलिए स्त्री पुरुष के संबंधों में नवीन नैतिकता की प्रतिष्ठा हो गई। द्विवेदी–युग में प्राचीनता और नवीनता का संघर्ष आरंभ ही हुआ था, जबकि छायावाद युग में इस संघर्ष की नवीन शक्ति काफी प्रबल हो गई। द्विवेदी युग में इच्छा और क्रिया, विवेक और संस्कार के बीच जो असंगति थी वह छायावाद युग में बहुत संतुलित हो गई। "आधुनिक विज्ञान ने पुरुष को रूढि विद्रोह और आत्म–विकास के लिए प्रेरित किया, उसी तरह नारी को भी, परंतु इस पुरुष–प्रधान समाज में नारी के लिए संभव नहीं है कि खुले शब्दों में रूढ़ियों को चुनौती दे सके। नारी तो पुरुष से भी अधिक वंदिनी है। उसकी दुनिया तो और भी छोटी है। वह अपने घर की खिड़की से विस्मय के साथ संसार की गतिविधि देखती है। उसके विस्मय के सामने जो कुछ आता है, उसे देख लेती है लेकिन उसकी समझ में कुछ भी नहीं आता कि लोग जो आ जा रहे हैं, वह न जाने कहाँ से आ रहे हैं और न जाने कहाँ जा रहे हैं। निस्संदेह कामायनी आधुनिक युग की श्रेष्ठ कृति है। यह छायावादी युग की चरम उपलब्धि है और प्रसाद जी की काव्य

कला का उत्कृष्ट प्रमाण है। इस कृति में मानवता की चिरंतन पुकार को अभिव्यक्त किया गया है। यह पुकार उन लोगों का मार्गदर्शन कर रही है जो निराश, भयग्रस्त, भ्रमित और विविध विसंगतियों के साथ जीवन बिता रहे हैं। इतना ही नहीं, 'कामायनी के माध्यम से कवि प्रसाद ने विजयिनी मानवता हो जाए का अमर संदेश भी प्रसारित किया है और आनंद अखण्ड घना था को चरम सोपानों पर ले जाकर मानव को सुख और शांति का मंगल मय संदेश भी दिया है। छायावादी युग की यह एक अकेली ऐसी रचना हैं जिसमें संपूर्ण काव्यधारा का सारतत्व और निचोड़ समाहित हुआ है। छायावाद मैं वैयक्तिकता, कल्पनाशीलता का स्वर साफ सुना जा सकता है। ये दोनों स्वर 'कामायनी' में भी बखूबी सुने जा सकते हैं। 'कामायनी' के आशा सर्ग, श्रद्धा सर्ग और लज्जा सर्ग में कल्पना का वैभव कितने ही रंगों में सज–सँवरकर सामने आया है। वैयक्तिकता की जो भावना आधुनिक युग में घर करती जा रही है, उसी के प्रतीक बनकर मनु भी 'कामायनी' के प्रारंभिक अंश में हमारे सामने आते हैं। वे असफल, निराश, हताश कितने ही हों, किन्तु वैयक्तिकता की सीमा में कैद हैं। एक प्रकार से वे आत्मकेंद्रित हैं। प्रसाद जी ने जिस वेदना को अपनाया, जिस अवसाद और निराशा को काव्य का उपजीव्य बनाया वह भी 'कामायनी' में देखा जा सकता है। 'कामायनी' में जो निराशा, अवसाद और वेदना के भाव हैं वे मनु की वेदना तक ही सीमित नहीं हैं वे तो प्रसाद जी की वेदना से भी जुड़े हुए है। अतीत के प्रति आसक्ति का भाव मनु को कुछ समय के लिए निष्क्रिय और अकर्मण्य बनाता है। जैसे ही श्रद्धा उनके संपर्क में आती है। वैसे ही वे प्रवृत्ति मार्गी हो जाते हैं। मनु का अतीत चिंतन है ही इसलिए कि वे उस केंद्रिभूत सुख, शक्ति और वैभव का स्मरण करते हुए भावी सृष्टि के विकास में अपना योगदान दे सकें। ऐसी स्थिति में इस प्रवृत्ति को दोषपूर्ण बताना और प्रसाद जी को पलायनवादी घोषित करना न केवल अनौचित्यपूर्ण है, अपितु 'कामायनी' के मूल संदेश से विरहित हो जाना भी है तो प्रसाद के इस स्थूल संदेश से भी विरहित हो जाना है। प्रसाद ने इस स्थूल सौंदर्य चित्रण के स्थान पर सूक्ष्म भावोपम अलौकिक सौंदर्य को अपने काव्य में स्थान दिया। 'कामायनी' में आया श्रद्धा का सौंदर्य वर्णन उसके अतींद्रिय सौंदर्य को प्रस्तुत करता है। इस सौंदर्य चित्रण में पात्र के बाह्य और मांसल सौंदर्य को उतना स्थान प्राप्त नहीं है। जितना कि उसकी अंतवृत्तियों के उद्घाटन को प्राप्त है। यही कारण है कि 'कामायनी में वासनाव्यंजक विशेषणों के स्थान पर निष्कलुष और अनाघ्रात सौंदर्य को अधिक स्थान दिया गया है। छायावाद के अंतर्गत जिस सौंदर्य का चित्रण किया गया है उसमें कहीं–कहीं छायावादियों के हृदय कि भावना अथवा पुकार भी अभिव्यक्त हुई है। ऐसे स्थलों पर लगता है कि छायावादी कविता का सौंदर्य अतृप्त अभिलाषाओं के रंगीन धुएं का सौंदर्य है। जब मनु श्रद्धा की हथेली अपने हाथों में ले लेते हैं तो उसका वर्णन प्रसाद ने पूरी छायावादी सौंदर्य भावना के अनुकूल ही किया है। कहने का तात्पर्य यह है कि छायावादी काव्य का चरम बिंदु 'कामायनी' जिसमें नारी सौंदर्य का चित्रण अलौकिक स्वरूप से ही अधिक अभिव्यक्त हुआ है, किंतु कहीं–कहीं इस सौंदर्य में भौतिक स्पर्श भी दिखाई देता है जो इस बात का प्रमाण है कि प्रसाद न तो कोरी भौतिकता के पक्षधर थे और न केवल अलौकिकता के ही। बल्कि उनकी नारी तो साकार है। केवल कल्पना मात्र नहीं।

कामायनी' में नारी के प्रति अर्चना और आराधना का भाव भी देखने को मिलता है। कवि प्रसाद ने नारी को पवित्र, पावन और गरिमामयी दृष्टि से देखा है। कवि प्रसाद जी ने नारी तुम केवल श्रद्धा हो कहकर और प्रकृति के सुकुमार कवि पंत जी ने तुम्हारी वाणी में कल्याणी, त्रिवणी की लहरौ का गान और स्वयं महाप्राण निराला जी ने वह इष्टदेव के मंदिर की पूजा सी कहकर इसी पवित्रतावादी दृष्टि को प्रस्तुत किया है। छायावाद का यह पवित्र और निष्कलुष दृष्टिकोण 'कामायनी' में सर्वत्र व्याप्त है। प्रसाद जी ने स्पर्श के आकर्षण से पूर्ण प्रकट करती ज्यों जड़ में स्फूर्ति कहकर इसी आव को व्यक्त किया है। रामधारी सिंह दिनकर ने ठीक ही लिखा है कि "कामायनी के कवि के मन में तो नारी की जो निष्कलुष प्रतिमा अवस्थित थी उसकी पवित्रता नारी रूप–चित्रण की शैली में भी झलक मारती है। अपने वर्णन में कवि ने वासना–व्यजंक विशेषणों का सर्वथा त्याग करके केवल ऐसे विशेषण रखे हैं जिससे स्वतः निष्कलुषता का वातावरण स्पर्श से प्रस्तुत हो जाता है। इस वातावरण में श्रद्धा का जो रूप प्रकट होता है, वह सचमुच से दूर और मन में अनिर्वचनीय स्फुरण उत्पन्न करने वाला है।

'कामायनी' की प्रमुख पात्र श्रद्धा मनु के जीवन में प्रेरक शक्ति के रूप में उपस्थित होती है। और उसे कर्म की प्रेरणा देती है। वह यह भी समझाती है कि यह जीवन सत्य है और निरंतर कर्म करते रहने से ही जीवन को सम्यक रूप से जिया जा सकता है। एक प्रकार से मनु के निराशा से भरे जीवन में आशा का संचार करती हुई श्रद्धा उन्हें जीवन की ओर प्रेरित करती है। यह स्पष्ट कह देती है कि तय नहीं केवल जीवन सत्य करुण यह क्षणिक दीन अवसाद।' श्रद्धा मनु को जीवन की ओर प्रवृत्त करती हुई, कर्म की प्रेरिका बनती हुई उन्हें निराशा के अंधकार से निकालने का प्रयत्न करती है। यह श्रद्धा रूप में नारी का सच्चा एवं आदर्श गुण है। वह इसमें सफल भी होती है, और मनु जीवन की ओर प्रवृत्त होते हैं, किंतु जीवन की ओर प्रवृत्त होकर वे भोग–विलास करने, आसुरी और पाशविक वृत्तियों के शिकार बनकर जीवन जीने को ही सब कुछ मान लेते हैं। नारी ही पुरुष जीवन में उज्जवल आलोक पैदा करती हुई उसकी सुप्त पड़ी चेतना को जगाती है। जब मनु घायल हो गये तब उनकी सोयी हुई चेतना जागी और उन्हें अहसास हुआ कि श्रद्धा सही थी। आज उसके बिना मेरा जीवन व्यर्थ हो गया है। ऐसी सोच मनु के मन में इड़ा सर्ग में भी जन्मी थी जब काम की शाप ध्वनि सुनकर वे इस निष्कर्ष पर पहुंचे थे कि सचमुच मैं हूँ श्रद्धाविहीन। आज का व्यक्ति भी श्रद्धा से रहित है। उसके मन में आस्था की कोई किरण नहीं दिखाई दे रही है। एक नारी ही सुषुप्त व निष्क्रिय पड़े मनुष्य को उसके कर्म पथ पर अग्रसर करा सकती है। श्रद्धा भी मनु को मानव जीवन के त्रिकोण से परिचित कराती है। यह त्रिकोण, इच्छा, क्रिया और ज्ञान का है। वह यह संकेत देती है। कि इच्छालोक अथवा भावलोक के प्राणी तो केवल आवलोक की दुनिया में रहते हैं. अतः उन्हें जीवन की वास्तविकताओं का ज्ञान ही नहीं होता है। वे तो शब्द, स्पर्श, रूप, रस और गंध में मानसिक दृष्टि से लीन होकर सदैव तृप्ति का अनुभव करते रहते हैं। यह इच्छालीक मानव की रजोगुणमयी प्रवृत्ति का परिचायक है और इस प्रवृत्ति के कारण ही मनुष्य ललित कलाओं में अधिक लीन रहकर भावजगत के आनंद में ही मद मस्त बना रहता है।

'कामायनी' में यह भी संकेतित है कि विषमता का विष मनुष्य के मन में ही व्याप्त नहीं है, वह पारिवारिक जीवन में भी घर करता जा रहा है। आज स्थिति यह हो गयी है कि जो दांपत्य संबंध स्नेह, विश्वास और समर्पण की नींव पर खड़े होकर आनंद का मार्ग दिखाते थे, वे ही आज आशंका, अविश्वास, पारस्परिक मतभेद और समन्वय के अभाव में कटु से कटुतम होते जा रहे हैं। ध्यान से देखें तो आज का मनुष्य मनु की भाँति विलासी दंभी और नारी को अपने आधीन मानकर जीने का अभ्यस्त होता जा रहा है। नारी–जागृति की कितनी ही बाते क्यों न की जा रही हों और नारी भी कितनी ही जागरुक होने की चेष्टा क्यों न कर रही हो, फिर भी हमारा आधुनिक पारिवारिक जीवन मनु और श्रद्धा की ही भाँति अशांति से भरा हुआ है। मनु की विकृति यह थी कि वे श्रद्धा के शरीर पर ही नहीं, मन पर भी पूरा अधिकार चाहते थे और आधुनिक मनुष्य की विकृति यह है कि वह केवल शरीर का रिश्ता ही रखना चाहता है। मनु पंचभूत की रचना में अकेले रमण

करना चाहते थे और श्रद्धा समर्पण की प्रतिमा बनी हुई उनके साथ रहना चाहती थी, किंतु मनु को यह गवारा नहीं हुआ। यही स्थिति आज भी है। आज भी पति अथवा पुरुष समाज अपनी पत्नी को पुरुषत्व के मोह में कुछ भी महत्व देने को तैयार नहीं है। उसकी दृष्टि में नारी की कोई सत्ता नहीं है। प्रसाद ने जब यह सोचा होगा तब से अब तक तो स्थिति और भी बदतर हो गई है। प्रसाद इस बात को समझ गये थे इसलिए उन्होने 'कामायनी' के इड़ा सर्ग में पारिवारिक समरसता की बात करते हुए काम की शाप ध्वनि के माध्यम से यह कहा है।

"तुम भूल गये पुरुषत्व मोह में कुछ सत्ता है नारी की
समरसता है संबंध बनी अधिकार और अधिकारी की।

पारिवारिक विषमता के अतिरिक्त हमें यह भी स्पष्ट दिखाई दे रहा है कि हमारे सामाजिक और राष्ट्रीय जीवन में भी विषमता व्याप्त है। विषमता के कारण राष्ट्रों में वर्ग आवना पैदा हो गई है। नये–नये अधिकारों के क्षेत्र सृजित हो रहे हैं और भेदभाव एवं पक्षधरता की भावना दिनों–दिन बढ़ती जा रही है। इसी सामाजिक और राष्ट्रीय विषमता के कारण सारस्वत प्रदेश को संघर्ष झेलना पड़ा। उसी सारस्वत प्रदेश की विभुता और सुखद स्थिति के लिए श्रद्धा ने सामाजिक और राष्ट्रीय समरसता का प्रचार करने की बात कही है। श्रद्धा ने कहा है 'सब की समरसता का कर प्रचार, मेरे सुत सुन माँ की पुकार। समरसता की इस वाणी ने सारस्वत प्रदेश में वर्ग भेद को समाप्त कर दिया और पूरा प्रदेश सुख शांति और समृद्धि से परिपूर्ण हो गया था। राष्ट्र में वसुधैव कुटुम्बकम् की भावना जायत हुई और इसी भावना को 'कामायनी' में महत्व दिया गया है इतना ही नहीं, श्रद्धा सर्ग के अंतर्गत प्रसाद ने श्रद्धा द्वारा कर्म का जो प्रेरक संदेश दिलवाया है, उसे पढ़कर तो प्रसाद की कर्म विषयक धारणा और भी अधिक स्पष्ट हो जाती है।

डरो मत अरे अमृत संतान, अग्रसर है मंगलमय वृद्धिः
पूर्ण आकर्षण जीवन केन्द्र, खिंची आवेगी सकल समृद्धि
विश्व की दुर्बलता बल बने, पराजय का बढ़ता व्यापार
हँसाता रहे उसे सविलास, शक्ति का कीड़ामय संचार
शक्ति के विद्युतकण, जो व्यस्त विकल बिखरे हैं, जो निरुपायः
समन्वय उनका करे समस्त विजयिनी मानवता हो जाये

नारी के संदर्भ से भी उन्होंने जो बातें कही हैं, वे उपेक्षणीय नहीं हैं। प्रसाद जिस आदर्श नारी को प्रस्तुत करने में सफल हुए हैं, वह भले ही आज की नारी का आदर्श न हो, किंतु वास्तविकता से किनारा तो नहीं किया जा सकता। वास्तव में प्रसाद या कोई भी कवि अपने युग की नारी को ध्यान में रखकर कोई कार्य नहीं करता है और न अपनी रचना में उसे कोई स्थान ही देता है। वह तो वही सोचता है जो शाश्वत होता है और लोक–कल्याणकारी होता है। श्रद्धा मंगल–कामना से युक्त है। आज की नारी यदि मंगल–कामना को महत्व नहीं दे पा रही है तो यह न नारी के हित मैं है और न समाज के हित में है।

प्रसाद ने 'कामायनी' में श्रद्धा को प्रमुखता से स्थान दिया है, किंतु इसका अर्थ यह नहीं है कि मनु और इड़ा की उपेक्षा की गयी है। वास्तव में, मनु श्रद्धा और इड़ा तीनों ही ऐतिहासिक पात्र हैं। यह अतिरिक्त उपलब्धि है कि ये तीनों पात्र सांकेतिक अर्थ भी रखते है। श्रद्धा काव्य की नायिका है। इसमें कोई संदेह नहीं कि वह संपूर्ण काव्य में अधिक स्थान घेरे हुए है। एक प्रकार से 'कामायनी' की कथा यदि मनु से प्रारंभ होती है तो श्रद्धा के आगमन से ही उसमें गति आती है और अंततः वह श्रद्धा ही है जो कामायनीकार के उदद्देश्य की वाहिका बनकर काव्य को अंतिम सोपानों तक ले जाती है। निस्संदेह प्रसाद अपने समूचे साहित्य में चाहे वह नाटक हो, उपन्यास हो या फिर काव्य हो कोई न कोई पात्र ऐसा रखते हैं जो उनके दृष्टिकोण का वाहक बनकर आया है। इस कृति में भी कामायनी अर्थात श्रद्धा प्रसाद के जीवन दर्शन की वाहिका बनकर आई है। ऐसा लगता है कि प्रसाद के जीवन विषयक निष्कर्ष अथवा चिंतन को श्रद्धा के माध्यम से स्पष्ट कर दिया गया है। श्रद्धा के व्यक्तित्व में प्रेम की शालीनता है, वह विश्वमंगल की व्यापक भावना से युक्त है, वह निराश नहीं है, एक अमर आस्था लिए हुए है। ममता, सहिष्णुता, त्याग, कभी न टूटने वाला उत्साह, कर्तव्यपरायणता और हृदय की सदाशयता एवं उच्चाशयता उसके व्यक्तित्व मैं पूंजीभूत हैं। प्रसाद ने उसके व्यक्तित्व का विश्लेषण करते हुए श्रद्धा सर्ग में ही कह दिया है।

दया, माया, ममता लो आज, मधुरिमा लो, अगाध विश्वास;
हमारा हृदय–रत्न निधि स्वच्छ तुम्हारे लिए खुला है पास

नारी का मातृत्व पक्ष श्रेष्ठ एवं पूज्यनीय माना जाता है। 'कामायनी में नारी के कई रूप चित्रित हुए हैं। प्रत्येक रूप को 'कामायनी' की पृष्ठभूमि पर शत–प्रतिशत खरा उतारते हुए कामायनीकार प्रसाद जी नारी के रूप में चित्रित श्रद्धा के मातृत्व पक्ष को इन पंक्तियों में व्यक्त करते हुए कहते हैं ।

झूले पर उसे झूलाऊँगी, दुलरा कर लूँगी बदन चूम,
मेरी छाती से लिपटा इस, घाटी में लेगा सहज घूम।
मेरी आँखों का सब पानी, तब बन जायेगा अमृत–स्निग्ध,
उन निर्विकार नयनों में जबदेखूँगी अपना चित्र मुग्धा

महाचिति सृष्टि का आदि तत्व है और इसी से वह परम, अद्वितीय एवं सर्वव्यापी सत्ता है।

उसका एकमात्र तत्व परमशिव है। चौतन्य, आनंद, इच्छा, ज्ञान तथा क्रिया ये पाँच उसकी प्रमुख शक्तियाँ हैं। शक्ति स्त्री स्वरूप है, इसी कारण उन्होंने महाचिति का विशेष उल्लेख किया है। शक्ति एवं शक्तिमान (शिव) की समरसता इसकी मूल आधार शिला है, न शिव शक्ति से विहीन है और न शक्ति शिव से विहीन है। दोनों एक साथ एकरूप होकर शाश्वत भाव से विद्रद्यमान् हैं।

कर रही लीलामय आनन्द, महाचिति सजग हुई सी व्यक्त,
विश्व का उन्मीलन अभिराम, इसी में सब होते अनुरक्त

कामायनीकार प्रसाद द्वारा रचित श्रद्धा एक हृदयगत भाव है। हृदय देश में ही आत्मा का निवास है। अतः श्रद्धा एक आत्मस्थानीय भाव है। श्रद्धा ही मनु मन को आत्म साक्षात्कार द्वारा अखण्ड आनंद की अनुभूति कराने में सफल होती है। नारी के विशाल और महिमामय स्वरूप का वर्णन कवि ने श्रद्धा के माध्यम से किया है। श्रद्धा मन की चेतना है और इसी के कारण ही मन में दया, माया, ममता आदि भाव जन्म लेते हैं। प्रसाद ने स्पष्ट रूप से नारी की वकालत की है। श्रद्धा के व्यक्तित्व के संदर्भ से यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी कि प्रसाद ने अपने हृदय की संपूर्ण भावनाओं को श्रद्धा को सौंप दिया है। उनकी मानवादर्श विषयक कल्पना श्रद्धा के रूप में ही व्यक्त हुई है। इसमें कोई संदेह नहीं कि श्रद्धा जैसा पात्र प्रसाद की अमर देन है। मनु की भांति वह भी एक ऐतिहासिक चरित्र है। प्रसाद की धारणा के संदर्भ से कहा जाये तो कह सकते है कि श्रद्धा अपने ऐतिहासिक व्यक्तित्व में आर्यावर्त के प्रबुद्ध, तरूण आर्यसंघ के पूर्वज मानव की माँ है। उसका चरित्र वैदिक आर्यों की आनंदवादी संस्कृति का दर्पण है। प्रेम, विश्वास,कर्तव्य और त्याग उसके चरित्र के आदर्श बिंदु हैं। उसका जीवन कर्म–साधना के धरातल पर कार्यरत रहा है। पूरे काव्य में श्रद्धा कहीं भी अपने

असाधारण व्यक्तित्व से स्खलित होती दिखाई नहीं देती है। श्रद्धा के जीवन का प्रमुख सिद्धांत–सूत्र था कि यह संसार कल्याण–भूमि है। उसकी धारणा यह भी है कि यह विश्व ब्रहम का व्यक्त रूप है। अतः सत है असत् नहीं है। एक प्रकार से इस धारणा के माध्यम से प्रसाद ने उस आमक धारणा का भी खण्डन कर दिया है। कि जगत असत्य है और जीवन क्षण भंगुर है। श्रद्धा इतनी संतुलित नारी है कि मनु को प्रत्येक स्थिति में समरस बने रहने का संदेश देती है। वह बार–बार यह कहती है कि अपने भीतर की चेतना को दूसरे की चेतना से मिला दो तो निश्चय ही जीवन समरस और आनंदमय हो जायेगा। 'कामायनी' के श्रद्धा, कर्म, ईर्ष्या, दर्शन और रहस्य सर्गों में उसके व्यक्तित्व का जो रुप आया है, उसे हम एक अविस्मरणीय पात्र का उदात्त चरित्र कह सकते हैं। यदि प्रतीक का सहारा लिया जाये तो श्रद्धा पराशक्ति का ऋतम्भरा प्रज्ञा के रूप मै सामने आती है। वह शक्तिमली है, जान–चेतना से संपन्न है और ऐसी प्रेम भावना से युक्त है जो मंगलकारिणी होती है। श्रद्धा के गृहलक्ष्मी रूप का परिचय देता हुआ कवि श्ईष्याश सर्ग में कहता है कि

जब देखो बैठी वहीं, शालियों बीन कर नहीं श्रांत!
या अन्न इक्डे करती है होती न तनिक सी कभी क्लांत,
चीजों का संग्रह और उधर चलती है तकली भरी गीत;
सब कुछ लेकर बैठी है वह, मेरा अस्तित्व हुआ अतीत

की पूरी तरह विफलता और इस विफलता के मूल कारण की पहचान और अंततः सामंजस्य के द्वारा आनंद की प्राप्ति आदि महत्वपूर्ण घटनाएँ हैं जो कवि प्रसाद को आज के दौर में भी प्रासंगिक बनाती है।

निष्कर्ष

कामायनीकार प्रसाद सच्चे अर्थों में ईश्वर का प्रसाद थे। उन्होंने 'कामायनी' जैसी कालजयी कृति साहित्य जगत को तो दी ही साथ ही उनकी आरंभिक रचनाओं में 'झरना', 'आँसू', 'लहर' एवं 'प्रेम पथिक' की अपनी एक विशिष्ट पहचान है। 'कामायनी' जो एक जीवन काव्य है उसको विस्तृत एवं सुदृढ़ आधार प्रसाद की आरंभिक कृतियों ने ही दिया। 'कामायनी' में श्रद्धा, मनु और इड़ा के माध्यम से कवि प्रसाद एक अपूर्व काव्य सृष्टि को जन्म देते हैं। श्रद्धा 'कामायनी' की मुख्य नारी पात्र है। वह जिस सभ्यता का आरंभ करती है उसमें मानव सभ्यता, दया, ममता, मधुरिमा, विश्वास, समपर्ण, सेवा, जीवन, उत्सर्ग आदि प्रमुख हैं। प्रसाद जी श्रद्धा के माध्यम से कहते हैं कि जीवन के आरोह–अवरोह में जब नैसर्गिक रूप श्रद्धा भाव का अविर्भाव होगा तभी वह मानव जीवन का मूल्य बनेगा। निस्संदेह कहा जा सकता है कि नारी और पुरुष के सौंदर्य–निरूपण में प्रसाद जी का जो दृष्टिकोण व्यक्त हुआ है, वह उनकी दिव्यता, गरिमा, पावनता, उज्जवलता और सांस्कृतिक बोध का परिणाम है। भारतीय संस्कृति के उपासक, मानवता के पक्षधर और अतिरिक्त बुद्धि–प्रयोग के विशेष होने के कारण प्रसाद जी का सौंदर्य बोध अपना प्रतिमान आप बनकर आया है।

संदर्भ ग्रंथ

1. प्रसाद ग्रंथावली भाग–4; सर्ग, पृ572
2. श्रद्धा सर्ग, पृ. 463
3. श्रद्धा सर्ग, पृ. 467
4. दर्शन सर्ग, पृ654
5. ईर्ष्या सर्ग, पृ. 562
6. ईर्ष्या सर्ग, पृ. 551
7. छायावादः पृ. 58
8. पंत प्रसाद और मैथिलीशरण, पृ.48